Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
A UGC CARE listed Journal
ISSN 2320–7175 | Volume 11, Issue 01, January-June, 2023
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2023

संगीत निर्देशक श्री हंसराज बहल की पंजाबी चित्रपट संगीत यात्रा

TANU CHAUDHARY[1] & DR. HARWINDER SINGH[2]

[1] Research Scholar, Department of Music and Dance, Kurukshetra University, Kurukshetra
[2] Assistant Professor, Department of Music and Dance, Kurukshetra University, Kurukshetra

सारांश

संगीत भाव अभिव्यक्ति का सर्वाधिक सशक्त माध्यम है। भाव उद्दीपन, आलंबन, प्रकटीकरण की प्रक्रिया में सहायक तत्वों की अपनी एक विशेष भूमिका रहती है। चित्रपट चूंकि समाज का दर्पण है इसलिए चित्रपट में मानवीय जीवन के विभिन्न रसों यथा वियोग, करूणा, श्रृंगार, रौद्र इत्यादि के पर्दापण तथा प्रकटीकरण को सशक्त बनाने में संगीत की अह्म भूमिका है जिसे स्वतंत्र विधा चित्रपट संगीत के रूप में जाना जाता है। पंजाबी भाषी चित्रपट का चित्रपट की दुनिया में अपना एक स्वतंत्र स्थान है। पंजाबी चित्रपट संगीत में समय-समय पर अनेक विभूतियों ने अपना योगदान दिया। श्री हंसराज बहल जी द्वारा हिन्दी चित्रपट संगीत की समृद्धि हेतु उत्कृष्ट भूमिका का निर्वहन सर्वविदित है। पंजाबी चित्रपट संगीत में उनकी यात्रा का अवलोकन करना प्रस्तुत शोध आलेख का विषय है।

मुख्य शब्द: संगीत, अभिव्यक्ति, भूमिका, चित्रपट, करूणा, श्रृंगार

परिचय

भारतीय चित्रपट संगीत के इतिहास में अनेक मूर्धन्य संगीत निर्देशक हुए हैं जिन्होनें अपनी सांगीतिक कृतियों द्वारा चित्रपट संगीत को समृद्ध बनाया है। इन्हीं महान संगीतकारों में 20वीं शताब्दी के उत्तर मध्यवर्ती दशकों के अमिट हस्ताक्षर प्रसिद्ध संगीत निर्देशक श्री हंसराज बहल जी हैं।

"श्री हंसराज बहल का जन्म 19 नवम्बर 1916 को हुआ।" उनके जन्म स्थान के विषय में विद्वान एकमत नहीं है। प्राप्त मतों के अनुसार उनके जन्मस्थान के विषय में दो मत प्राप्त होते हैं। "प्रथम मत के अनुसार उनका जन्म अम्बाला (जो तब संयुक्त पंजाब में था तथा वर्तमान में हरियाणा में है) में हुआ। "द्वितीय मत के अनुसार उनका जन्म रावलपिंडी के समीप शेखुपूरा (वर्तमान पाकिस्तान) में हुआ।" हंसराज बहल के पिता जी 'श्री निहाल चन्द बहल' इलाके के एक समृद्ध जमींदार थे। उन की 'श्री गुरू ग्रंथ साहिब' में अपार श्रद्धा थी और हंसराज बहल भी बाल्यावस्था में सबद कीर्तन किया करते थे और सितार बजाने में दिलचस्पी रखते थे। हंसराज बहल को बचपन से ही संगीत सुनने व सीखने का शौक था। "आप ने संगीत की शिक्षा पंडित चिरंजीवी लाल 'जिज्ञासु' (अम्बाला) से प्राप्त की।" संगीत की बारीकियों को आत्मसात करने के पश्चात् "सन् 1944 को श्री हंसराज बहल अपने भाई गुलशन बहल और आपके गीतकार मित्र वर्मा मलिक के साथ मुम्बई आ गए।"

आप एक प्रतिभाशाली संगीतकार थे। गायकों द्वारा आप का बहुत सम्मान किया जाता था। सभी आपको सम्मान से 'मास्टर जी' कहकर पुकारते थे। "दिग्गज गायिका मधुबाला झावेरी हमेशा आप को इसी नाम से पुकारती थी।"

पंजाबी चित्रपट संगीत में श्री हंसराज बहल जी की संगीत यात्रा

संगीत निर्देशक के रूप में आप ने चित्रपट संगीत निर्देशन की शुरूआत हिन्दी सिनेता की फिल्म 'पुजारी' (1946) से की तथा हिन्दी चित्रपट में अनेक अमर रचनाओं की रचना की एवं इसी के साथ-साथ पंजाबी चित्रपट संगीत निर्देशन में भी आपकी महत्वपूर्ण भूमिका रही। आपने अपने 40 वर्षों के कार्यकाल में हिन्दी फिल्मों के साथ-साथ लगभग 25 पंजाबी फिल्मों में संगीत निर्देशन किया तथा लगभग 400 हिन्दी तथा लगभग 200 पंजाबी भाषी गीतों को संगीतबद्ध किया। हंसराज बहल ने मोहम्मद रफी, महिन्द्र कपूर, शमशाद बेग़म, लता-मंगेशकर, आशा भौंसले, दिलराज कौर, मीनू प्रशोत्तम, सुमन कल्याणपुरी, मोहम्मद सदीक आदि गायक कलाकारों के कंठ की विशेषताओं को देखते हुए उनसे भावपूर्ण गीत गवाये। बहल जी ने प्रसिद्ध गीतकारों जैसे

Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
A UGC CARE listed Journal
ISSN 2320–7175 | Volume 11, Issue 01, January-June, 2023
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2023

वर्मा मलिक, मुलक राज भाखड़ी, मुनसिफ, बाबू सिंह मान, नंदलाल नूरपुरी, इन्द्रजीत हसनपुरी आदि द्वारा कलमबद्ध गीतों को स्वरबद्ध किया।

आपके द्वारा निर्मित सांगीतिक कृतियों में पंजाबी परम्परागत धुनों का पुट परिलक्षित होता है। आपने सन् 1949 में पंजाबी फिल्म 'लच्छी' के लिए ऐसे आकर्षक एवं हृदयस्पर्शी गीतों को संगीतबद्ध किया जिस कारण पंजाबी फिल्म जगत में हंसराज बहल और उनके संगीत की चर्चा होने लगी। इस फिल्म के गीतों में आवाज 'मोहम्मद रफी' और 'लता मंगेशकर' ने दी। इन गीतों को हंसराज बहल ने अपनी अद्भुत सांगीतिक सूझबूझ से श्रृंगारा जिन्हें लोगों ने बहुत पसंद किया। फिल्म 'लच्छी' का गीत 'तुम्बा वज्जदा ना तार बिना' अत्यंत प्रसिद्ध हुआ। इसी फिल्म के अन्य गीत 'काली कंघी नाल काले वाल पई', 'मेरी लगदी किसे ना वेखी' देश भर में प्रसिद्ध हुए। अगली फिल्म 'छई' (1950) में बहल जी ने 'हो अजी ओ मुंडा मोह लेया', 'दिल टुट गये मिलन तो पहलां' गीतों को संगीतबद्ध किया जिसे लोगों द्वारा अत्यंत सराहा गया।

इसी बीच श्री हंसराज बहल और उनके भाई श्री गुलशन बहल द्वारा अपने पिता की याद में सन् 1954 में 'एन.सी. फिल्मस' नामक कम्पनी की स्थापना की गई। एन.सी. फिल्मस् की पहली फिल्म 'लाल परी' पर्दे पर आई। मास्टर जी की अगली दो पंजाबी फिल्में 'जुगनी' और 'भंगड़ा' प्रसिद्ध हुई। फिल्म 'जुगनी' के गीत 'टुट्टी अध विचो', 'माही वे मैं छनकौनी आ वंगा', 'दुपट्टा पतला गंढे दी छिल वरगा' और फिल्म 'भंगड़ा' के गीत 'अंबिया दे बूटेयां ते लग गया बूर', 'बत्ती बाल के बनेरे उत्ते रखनी आ', 'जट्ट कुड़ीयां तो डरदा मारा' आज भी सरहद के दोनों ओर धूम मचा रहे हैं। 1960 में फिल्म 'दो लछछीयाँ' के गीत 'तेरी कनक दी राखी मुंडेया हुण', 'भावे बोल ते भाव ना बोल वे चन्ना', 'सारी उमरा दे पये गये विछोड़े' श्रोताओं द्वारा अत्याधिक पसंद किए गए। आपकी अगली फिल्म 'गुड्डी' (1961) के गीतों 'दाना-पानी खिच के लयोंदा', 'प्यार दे भुलेखे किन्ने सोहणे', 'नी टुट्ट जावें रेल गड्डीये', 'सानू तक के ना संगेया करो' में भी अपने संगीत का जादू बिखेरा। फिल्म 'ढोल जानी' (1962) के गीत ''ठग्गी मित्रा नाल ना करिये', 'होय... ढोल जानी वे साडी गली आवे' भी काफी लोकप्रिय हुए। फिल्म 'खेडण दे दिन चार' (1962) में 'रावी छड्ड चल्ले आ', 'रूप तेरे विच चड़दे सूरज', 'लंबीया ने कालीयां चन्न वे रातां' गीतों को लोगों द्वारा काफी पसंद किया गया। 1963 में फिल्म 'लाजो' और 'पिंड दी कुड़ी' पर्दे पर आई। 'पिंड दी कुड़ी' के गीत 'लाइयां ते तोड़ निभावीं', 'कत्तया करू तेरी रूँ' अत्यंत लोकप्रिय हुए।

सन् 1964 में फिल्म 'सतलुज दे कंढे' के गीतों 'उस पंछी नाल', 'ना दिसे तू ना दिसे तेरा परछांवा' ने लोगों के दिल को छू लिया। फिल्म 'शेरनी' में 'गल सुन ओ यार परदेसी', 'अक्ख कुड़ी दी', 'नी अक्खाँ तेरियाँ' आदि गीतों को लोगों द्वारा काफी सराहा गया। फिल्म 'मोरनी' के गीत 'बण के मैं मोरनी खेतां विच', 'तेरे अंदरो मैल ना जावे' प्रसिद्ध हुए। सन् 1977 में धार्मिक फिल्म 'जय माता दी' में बहल जी द्वारा संगीत निर्देशन किया गया। इस फिल्म के गीत 'ना रब मिलदा मंदर-मस्जिद', 'उच्चियाँ मंदरा चड जा चडाईयाँ' अत्यंत लोकिप्रिय रहे। इसी वर्ष फिल्म 'लच्छी' के गीत 'नी चिट्टे दंद गोरिए', 'असाँ यार दे नज़ारे विच्चों रब वेखिया', 'कदी ना बन्नी गोरी बाँह उत्ते घड़ी' और फिल्म 'शेर पुत्तर' का गीत 'हुण मैं नचणा' को लोगों द्वारा भरपूर सराहना मिली। सन् 1979 में निर्मित फिल्म 'जट्ट पंजाबी' के गीत 'ज़िंदे मेरिए', 'रब करे टूट जाण बटन तेरे' प्रसिद्ध हुए। इसी वर्ष फिल्म 'जुगनी' एवं 'कुवारा मामा' के गीत बहुत प्रसिद्ध हुए। फिल्म 'सरदार-ए-आज़म' के देशभक्ति गीतों 'साडी सोने दी ए धरती' 'सेवा देश दी जिंदड़ीए' को लोगों द्वारा आज भी सुना जाता है।

इसके परवर्ती वर्षों में निर्मित फिल्मों जैसे 'जट्टी' का गीत 'मैं सुत्ती ते ले गया जुत्ती', 'जीजा-साली' का गीत 'चस्का-चस्का-चस्का लोकां नूं चस्का दूजी दा', फिल्म 'चस्का' का गीत 'तेरी अक्ख ने शरारत कीती', 'छम्मक-छल्लो' का गीत 'रंग बिरंगी गुड्डी मेरी' आदि गीतों को श्रोताओं द्वारा अत्यंत पसंद किया गया। फिल्म 'वोट्टी हत्थ सोटी' में बहल जी द्वारा स्वरबद्ध भावपूर्ण रचना

Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
A UGC CARE listed Journal
ISSN 2320–7175 | Volume 11, Issue 01, January-June, 2023
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2023

'ऐ की कहर.... धियाँ दित्तीयाँ' जिसे बाबू सिंह मान द्वारा कलमबद्ध किया गया तथा मोहम्मद सदीक ने बड़े दिलकश अंदाज में गाया को लोगों द्वारा अत्यंत सराहा गया।

उपसंहार

इस बात में कोई संदेह नहीं है कि श्री हंसराज बहल जी को पंजाबी सिने संगीत में अपार सफलता मिली। आपने लगभग 200 पंजाबी गीतों द्वारा 40 वर्षों तक पंजाबी चित्रपट संगीत की सेवा की। हंसराज बहल जी ने सीमित संसाधनों का उपयोग करते हुए अत्यंत मधुर रचनाओं की रचना की। पंजाब की लोकधुनों का पुट तथा सम-सामयिकी संगीत का समन्वय आपके संगीत निर्देशन की प्रमुख विशेषता है। इसके अतिरिक्त लोकवाद्य यंत्रों का भरपूर उपयोग भी आप द्वारा स्वरबद्ध गीतों को श्रोताओं के मध्य लोकप्रिय बनाने में प्रमुख भूमिका निभाता है। सार रूप में यह कहा जा सकता है कि आप द्वारा निर्देशित संगीत रचनाएं भावपूर्ण, मधुर, सरल व जन उदगारों के साथ एकीकरण व अपनत्व स्थापित करने में सक्षम थी। "कभी शराब को हाथ न लगाने वाले हंसराज बहल 20 मई 1984 को कैंसर की बिमारी से जूझते हुए चिरनिद्रा में लीन हो गए।" आपका पंजाबी सिने संगीत में योगदान सदैव अविस्मरणीय रहेगा। आपके द्वारा निर्मित अमर धुनें संगीत के नभमंडल में सदैव गुंजायमान रहेंगी।

संदर्भ सूची

1. पंकजराग, 'धुनों की यात्रा', द्वितीय संस्करण राज कमल प्रकाशन, 2007, पृष्ठ 292
2. मधुरानी शुक्ला, 'भारतीय सिनेमा की विकास यात्रा' कनिष्क पब्लिशिंग हाऊस, नई दिल्ली, 2018, पृष्ठ 412
3. जावेद हमीद, 'हिन्दी सिनेमा के सदाबहार संगीतकार', अतुल्य पब्लिकेशन्स, दिल्ली 2019, पृष्ठ 110
4. बक्शी सिंह, आदिल, 'पंजाबी संगीतकार', नवीन प्रकाशन अमृतसर, 1978, पृष्ठ 29
5. त्रिनेत्रा बाजपाई एवं अनशुला बाजपाई Those Magnificent Music Makers, National Publishing House, New Delhi 2012, पृष्ठ 205
6. हंसराज बहल- एक भूले बिसरे संगीतकार, 'महफिल में मेरी', 20 मई 2020
7. त्रिनेत्रा बाजपाई एवं अनशुला बाजपाई Those Magnificent Music Makers, National Publishing House, New Delhi 2012, पृष्ठ 209
8. भीमराज गर्ग, 'पंजाबी फिल्म इतिहासकार' सिनेमाईज साईट